[This question paper contains 2 printed pages.]

Sr. No. of Question Paper : 1339 **D** **Your Roll No.....**

Unique Paper Code : 205504

Name of the Course : **B.A. (H) HINDI**

Name of the Paper : Paper XVII – Hindi Natak

Semester : V

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्नों के उत्तर अनिवार्य हैं।

1. किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (8,7)

(क) हा ! यह वही भूमि है जहाँ साक्षात भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र के दूतत्व करने पर भी वीरोत्तम दुर्योधन ने कहा था, 'सूच्यग्र नैव दास्यामि विना युद्धेन केशव' और आज हम उसी भूमि को देखते हैं कि श्मशान हो रही है। अरे यहाँ की योग्यता, विद्या, सभ्यता, उद्योग, उदारता, धन, बल, मान, दृढ़चित्तता, सत्य सब कहाँ गए ? अरे पामर जयचंद! तेरे उत्पन्न हुए बिना मेरा क्या डूबा जाता था ? हाय ! अब मुझे कोई शरण देने वाला नहीं।

(ख) हा ! भारतवर्ष को ऐसी मोहनिद्रा ने घेरा है कि अब इसके उठने की आशा नहीं। सच है, जो जानबूझकर सोता है उसे कौन जगा सकेगा ? हा दैव ! तेरे विचित्र चरित्र हैं, जो कल राज करता था, वह आज जूते में टांका उधार लगवाता है। कल जो हाथी पर सवार फिरते थे, आज नंगे पांव बन बन की धूल उड़ाते फिरते हैं। कल जिनके घर लड़के लड़कियों के कोलाहल से कान नहीं दिया जाता था आज उसका नाम लेवा और पानी देवा कोई नहीं बचा और कल जो घर अन्न, धन, पूत, लक्ष्मी हर तरह से भरे पूरे थे आज उन घरों में तूने दीया बालने वाला भी नहीं छोड़ा।

(ग) आर्य ! आप बोलते क्यों नहीं ? आप धर्म के नियामक हैं। जिन स्त्रियों को धर्म-बंधन में बांधकर, उनकी सम्मति के बिना आप उनका सब अधिकार छीन लेते हैं, तब क्या धर्म के पास कोई प्रतिकार - कोई संरक्षण नहीं रख छोड़ते, जिससे वे स्त्रियाँ अपनी आपत्ति में अवलम्ब माँग सकें ? क्या भविष्य के सहयोग की कोरी कल्पना से उन्हें आप संतुष्ट रहने की आज्ञा देकर विश्राम ले लेते हैं ?

P.T.O.

(घ) मैं बताती हूँ राजन् ! धरती माँ ने कहा होगा - मैं गौ हूँ, लेकिन मुझे दुहने वाला कहाँ है ? और मेरे योग्य बछड़ा और दोहनपात्र, जिसमें मेरे दूध की धाराएँ एकत्र हों ! ...तुम राजा हो, प्रजा के नेता हो । तुम्हारा पुरूषार्थ सिर्फ़ युद्ध और संघर्ष में ही तो नहीं है । मैं वसुंधरा हूँ, मुझे दुह कर अभीष्ट वस्तुओं को निकालने में भी तुम्हारा पुरूषार्थ है और तुम्हारी प्रजा का धर्म है । तुम आर्यकुल के पहले राजा हो । हे राजन्, कर्मपुरुष बनो !

2. वर्तमान सन्दर्भ में 'भारत-दुर्दशा' नाटक की प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए ।

अथवा

'भारत-दुर्दशा' एक प्रतीक नाटक है, विवेचन कीजिए । (15)

3. 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक के आधार पर ध्रुवस्वामिनी का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

अथवा

'ध्रुवस्वामिनी' एक सफल रंगमंचीय नाटक है', इस कथन की समीक्षा कीजिए । (15)

4. "'पहला राजा' नाटक पौराणिक कथा के माध्यम से आधुनिक समस्याओं को हमारे सामने प्रस्तुत करता है ।" इस कथन पर विचार कीजिए ।

अथवा

एकांकी के तत्त्वों के आधार पर 'चारूमित्रा' का मूल्यांकन कीजिए । (15)

5. किसी **एक** का उत्तर लिखिए :-

(क) "पुरुष प्रधान समाज स्त्री के ज्ञान और कीर्ति को आज भी स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है ।" 'नेपथ्य राग' नाटक के आधार पर इस कथन की समीक्षा कीजिए ।

(ख) स्वदेश दीपक ने 'कोर्ट मार्शल' में विकाश राय को आत्मा का अहेरी क्यों और किस सन्दर्भ में कहा है ? स्पष्ट कीजिए ।

(ग) 'मुक्ति का रहस्य' नाटक की तात्त्विक समीक्षा कीजिए ।

(घ) 'एक सत्य हरिश्चन्द्र' नाटक का भाषिक सौन्दर्य उद्घाटित कीजिए । (15)